



अल्पबुद्धि से अज्ञानतापूर्वक...  
 वीतराग परमात्मा की  
 प्राणभरी आज्ञा विरुद्ध  
 इस पत्रिका में कुछ भी लिखा गया हो,  
 विवेचित किया गया हो,  
 तो त्रिविध त्रिविध मिच्छामी दुक्कडम्...

महोत्सव में आप होंगे- हम सब होंगे,  
 दिव्यलोक में आयेगे देव-देवेन्द्र...  
 आग्रहभरा आत्मीय-आमन्त्रण है,  
 स्वीकारें सविनय सादर जयजिनेन्द्र...